महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर
MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

एमडीएसयू योग शिविर का शुभारंभ

छात्रों से अनुशासन और नियमित अभ्यास की अपील

कुलगुरु प्रोफेसर सुरेश अग्रवाल विद्यार्थियों के साथ योगाभ्यास करते हुए।

अजमेर. महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय में एक महीने के योग शिविर की शुरुआत हुई। इस मौके पर कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि योग सिर्फ शरीर को फिट रखने के लिए नहीं है, बल्कि यह इंसान के जीवन को बेहतर बनाने का तरीका भी है। योग से मन शांत रहता है और सोच सकारात्मक बनती है। उन्होंने कहा कि आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में लोग तनाव का सामना कर रहे हैं। ऐसे समय में योग और प्राणायाम बहुत मददगार साबित होते हैं। नियमित योग करने से शरीर में ऊर्जा बनी रहती है और मन भी शांत रहता है। कुलगुरु ने कहा कि नई शिक्षा नीति में बच्चों और युवाओं के सम्पूर्ण विकास पर जोर दिया गया है और योग इसमें अहम भूमिका निभाता है। उन्होंने अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि उन्होंने भी हमेशा योग को अपने जीवन का हिस्सा बनाने की कोशिश की है। प्रो. अग्रवाल ने कहा कि योग ने भारत को पूरी दुनिया में अलग पहचान दिलाई है। आज कई देश योग को अपना रहे हैं और हर साल 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है। उन्होंने गीता का जिक्र करते हुए कहा कि भगवान श्रीकृष्ण ने कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग का संदेश दिया था। कर्मयोग इंसान को हर परिस्थिति में धैर्य और संतुलन बनाए रखना सिखाता है। योग व्यक्ति को मानसिक रूप से मजबूत बनाता है। समारोह में कुलगुरु ने योग शिविर को सफल बनाने के लिए विभाग की टीम और आयोजन से जुड़े सभी लोगों का धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों और प्रतिभागियों को ऐसे आयोजनों में पूरे उत्साह, अनुशासन और समय की पाबंदी के साथ भाग लेना चाहिए। इस दौरान डॉ. आशीष पारीक, डॉ. लारा शर्मा, जयंती देवी, विभाग के शिक्षक, शोधार्थी, विद्यार्थी और बड़ी संख्या में योग साधक मौजूद रहे।

योग का महत्व

- योग शरीर को स्वस्थ और लचीला बनाता है।
- यह मानसिक तनाव और चिंता को कम करता है।
- योग से एकाग्रता एवं स्मरण शक्ति बढ़ती है।
- नियमित योग करने से रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत होती है।

पढ़ाई के साथ कमाई का मौका

एमडीएसयू की नई पहल से छात्रों को मिलेगा नौकरी जैसा अनुभव

अजमेर. अक्सर छात्र पढ़ाई पूरी करने के बाद यह महसूस करते हैं कि उनके पास डिग्री तो है, लेकिन काम का अनुभव नहीं है। ऐसे में नौकरी पाने में कई परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इसी समस्या को ध्यान में रखते हुए महर्षि दयानंद सरस्वती यूनिवर्सिटी ने छात्रों के लिए एक नई पहल शुरू की है। यूनिवर्सिटी द्वारा शुरू की गई 'लर्न, अर्न एंड परफॉर्म' योजना अब छात्रों को पढ़ाई के साथ काम करने और कुछ आर्थिक सहायता पाने का अवसर देगी। इस योजना के तहत छात्र यूनिवर्सिटी के विभिन्न विभागों में काम कर सकेंगे। काम के बदले उन्हें हर महीने आर्थिक सहायता भी दी जाएगी। सबसे खास बात यह है कि इससे छात्रों को केवल पैसों की मदद ही नहीं मिलेगी, बल्कि उन्हें नौकरी जैसा माहौल और कार्य अनुभव भी मिलेगा, जो आगे उनके करियर में काफी मददगार साबित हो सकता है। आज के समय में सिर्फ किताबों की पढ़ाई काफी नहीं मानी जाती। कंपनियां और संस्थान ऐसे युवाओं को ज्यादा महत्व देते हैं, जिनके पास प्रैक्टिकल अनुभव हो। कई छात्र ऐसे होते हैं जो पढ़ाई के साथ कुछ सीखना चाहते हैं, लेकिन उन्हें सही प्लेटफॉर्म नहीं मिल पाता। एमडीएसयू की यह योजना छात्रों को वही अवसर देने की कोशिश करती नजर आ रही है।छात्रों का मानना है कि यह पहल उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने में भी मदद करेगी। यूनिवर्सिटी के माहौल में काम करने से उन्हें जिम्मेदारियों को समझने का मौका मिलेगा। साथ ही, अलग-अलग विभागों में काम करते हुए नई चीजें सीखने का अनुभव भी मिलेगा। कई छात्रों के लिए यह योजना आर्थिक रूप से भी राहत देने वाली साबित हो सकती है, क्योंकि आज के समय में शिक्षा से जुड़े खर्च लगातार बढ़ रहे हैं। एक छात्र के नजरिए से देखा जाए तो यह सिर्फ एक योजना नहीं, बल्कि

छात्रों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में उठाया गया एक अच्छा कदम है। अक्सर कॉलेज जीवन में छात्र सिर्फ परीक्षा और अंकों तक सीमित रह जाते हैं, लेकिन ऐसी योजनाएं उन्हें वास्तविक जीवन की तैयारी करने का अवसर देती हैं।हालांकि, छात्रों का यह भी कहना है कि योजना का सही तरीके से संचालन होना बेहद जरूरी है। यदि सभी छात्रों को निष्पक्ष तरीके से मौका मिले और काम के साथ पढ़ाई का संतुलन बना रहे, तो यह योजना यूनिवर्सिटी के लिए एक सकारात्मक उदाहरण बन सकती है। एमडीएसयू की 'लर्न, अर्न एंड परफॉर्म' योजना छात्रों के लिए एक नई उम्मीद लेकर आई है। यह पहल न केवल छात्रों को आर्थिक सहायता देगी, बल्कि उन्हें भविष्य के लिए बेहतर तरीके से तैयार करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

स्मार्ट फ्यूल कैंपस की ओर

स्मार्ट कैंपस, डिजिटल प्रशासन, ऊर्जा-कुशल प्रणालियाँ और तकनीक आधारित संसाधन प्रबंधन पर्यावरणीय प्रभाव को काफी हद तक कम कर सकते हैं।

प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल
कुलगुरू,महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय (अजमेर)

किसी भी संस्थान के जीवन में कुछ ऐसे क्षण आते हैं, जब लिया गया कोई निर्णय केवल प्रशासनिक प्रक्रिया तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह संस्थान के मूल्यों और सिद्धांतों का प्रतीक बन जाता है। ऐसे क्षण विश्वविद्यालयों की नैतिक दिशा तय करते हैं और यह दर्शाते हैं कि वे केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता के प्रति ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय जिम्मेदारी और मानव कल्याण के प्रति भी कितने प्रतिबद्ध हैं। आज जब पूरा विश्व बढ़ती पर्यावरणीय चुनौतियों, जलवायु परिवर्तन की अनिश्चितताओं और संभावित ईंधन संकट जैसी समस्याओं का सामना कर रहा है, जो समाज और अर्थव्यवस्था दोनों को प्रभावित कर सकती हैं, तब उच्च शिक्षण संस्थानों को सार्थक कदमों के माध्यम से नेतृत्व प्रस्तुत करना चाहिए।

इसी जिम्मेदारी की भावना के साथ महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय ने विश्वविद्यालय परिसर में पेट्रोल और डीजल वाहनों के उपयोग को नियंत्रित करने तथा पर्यावरण अनुकूल विकल्पों जैसे ई-ऑटो रिक्शा, बैटरी संचालित परिवहन और पैदल आवागमन को प्रोत्साहित करने की एक महत्वपूर्ण पहल की है। यह निर्णय माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति के मार्गदर्शन की भावना के अनुरूप तथा ईंधन संरक्षण और पर्यावरण सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए केंद्र एवं राज्य सरकारों द्वारा किए जा रहे प्रयासों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए लिया गया है।

यह पहल केवल परिसर के भीतर परिवहन व्यवस्था को नियंत्रित करने तक सीमित नहीं है, बल्कि जागरूकता, अनुशासन और सामूहिक जिम्मेदारी की संस्कृति विकसित करने का प्रयास भी है। विश्वविद्यालय समाज से अलग कोई पृथक स्थान नहीं होते, बल्कि वे बौद्धिक और नैतिक केंद्र होते हैं, जो आने वाली पीढ़ियों की सोच और चेतना का निर्माण करते हैं। इसलिए विश्वविद्यालय परिसर में उठाया गया प्रत्येक कदम शैक्षणिक और सामाजिक दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण होता है।

आधुनिक विश्वविद्यालयों को सतत विकास संबंधी व्यवहारों की जीवंत प्रयोगशाला बनना होगा। पर्यावरणीय जागरूकता केवल सेमिनारों, पाठ्यपुस्तकों या शैक्षणिक चर्चाओं तक सीमित नहीं रह सकती। उसे संस्थागत व्यवहार और दैनिक जीवन में भी दिखाई देना चाहिए। जब विद्यार्थी अनावश्यक वाहन उपयोग के स्थान पर पैदल चलना चुनते हैं, जब शिक्षक और कर्मचारी हरित परिवहन को समर्थन देते हैं, और जब पूरा परिसर पर्यावरणीय अनुशासन का उदाहरण बनता है, तब शिक्षा वास्तव में परिवर्तनकारी शक्ति प्राप्त करती है।

यह पहल अंतर्विषयक और बहुविषयक सोच के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को भी दर्शाती है। पर्यावरणीय स्थिरता केवल पर्यावरण वैज्ञानिकों का विषय नहीं है, बल्कि यह विज्ञान, प्रौद्योगिकी, सामाजिक विज्ञान, अर्थशास्त्र, प्रशासन, स्वास्थ्य, नैतिकता और संस्कृति सहित पूरे समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है। आज मानवता जिन चुनौतियों का सामना कर रही है, उनके समाधान के लिए समन्वित दृष्टिकोण और सहयोगात्मक चिंतन आवश्यक है। इसलिए विश्वविद्यालयों को जलवायु परिवर्तन, नवीकरणीय ऊर्जा, ईंधन संरक्षण, पारिस्थितिक संतुलन और सतत शहरी नियोजन जैसे वास्तविक मुद्दों पर शोध और नवाचार को प्रोत्साहित करना चाहिए।

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय में हम निरंतर ऐसे शैक्षणिक वातावरण के निर्माण का प्रयास कर रहे हैं, जो आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण को भारतीय ज्ञान परंपरा की बुद्धिमत्ता के साथ जोड़ता हो। भारतीय सभ्यता में सतत विकास की अवधारणा सदैव केंद्रीय रही है। संयम, संतुलन, सह-अस्तित्व और सामूहिक कल्याण जैसे मूल्य हमारी दार्शनिक परंपराओं में गहराई से समाहित हैं। "वसुधैव कुटुम्बकम्" का विचार हमें यह सिखाता है कि पूरा विश्व एक परिवार है, इसलिए पर्यावरणीय जिम्मेदारी को वैश्विक नैतिक दायित्व के रूप में देखा जाना चाहिए।

इस यात्रा में विद्यार्थियों की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। आज के युवा ही कल के नेता, नवप्रवर्तक, नीति निर्माता और जिम्मेदार नागरिक बनेंगे। मैं विद्यार्थियों से आग्रह करता हूँ कि वे यह समझें कि दैनिक जीवन में जिम्मेदार व्यवहार सीधे राष्ट्र निर्माण में योगदान देता है। ईंधन संरक्षण, पर्यावरणीय अनुशासन, प्रदूषण में कमी और सतत जीवनशैली अपनाना भी रचनात्मक देशभक्ति के स्वरूप हैं। छोटे-छोटे जागरूक प्रयास, जब सामूहिक रूप से किए जाते हैं, तब वे बड़े सामाजिक परिवर्तन का आधार बनते हैं।

मैं पैदल चलने को प्रोत्साहित करने वाली परिसर संस्कृति से जुड़े शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के महत्व को भी विशेष रूप से रेखांकित करना चाहता हूँ। पैदल चलना न केवल पर्यावरणीय दबाव को कम करता है, बल्कि यह स्वास्थ्य, सजगता, आपसी संवाद और मानसिक संतुलन को भी बढ़ावा देता है। विश्वविद्यालयों को ऐसे स्थान बनना चाहिए, जो स्वस्थ जीवनशैली, सामुदायिक सहभागिता और प्रकृति के साथ सामंजस्य को प्रोत्साहित करें।

हमारे शिक्षकों की भूमिका भी इस अभियान में अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षक केवल जानकारी प्रदान करने वाले व्यक्ति नहीं होते, बल्कि वे मार्गदर्शक, प्रेरक और बौद्धिक संस्कृति के निर्माता होते हैं। सतत संस्थागत व्यवहारों में उनकी भागीदारी विद्यार्थियों और समाज दोनों के लिए एक सशक्त संदेश देती है। मैं अपने शिक्षकों से आग्रह करता हूँ कि वे पर्यावरणीय नैतिकता, हरित प्रौद्योगिकी, सतत विकास और सामुदायिक आधारित विकास मॉडल पर शोध, नवाचार और संवाद को निरंतर आगे बढ़ाते रहें।

डिजिटल परिवर्तन का वर्तमान दौर सतत प्रशासन के लिए नए अवसर भी प्रदान करता है। स्मार्ट कैंपस, डिजिटल प्रशासन, ऊर्जा-कुशल प्रणालियाँ और तकनीक आधारित संसाधन प्रबंधन पर्यावरणीय प्रभाव को काफी हद तक कम कर सकते हैं। विश्वविद्यालयों को नवाचार और जिम्मेदारी के बीच संतुलन स्थापित करते हुए यह सुनिश्चित करना होगा कि तकनीकी प्रगति मानवता और पारिस्थितिक संतुलन दोनों के हित में कार्य करे।

समाज से गहराई से जुड़े एक सार्वजनिक संस्थान के रूप में हमारा विश्वविद्यालय परिसर से बाहर भी जागरूकता और सतत व्यवहारों को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है। ग्रामीण संपर्क, सामुदायिक सहभागिता, पर्यावरण शिक्षा और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसी पहलें आधुनिक उच्च शिक्षा के महत्वपूर्ण आयाम हैं। विश्वविद्यालयों को सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन के प्रेरक केंद्र के रूप में कार्य करना चाहिए।

विश्वविद्यालय परिसर में पेट्रोल और डीजल वाहनों के उपयोग को नियंत्रित करने का यह निर्णय भले ही सीमित स्तर का प्रतीत हो, लेकिन इसका संदेश अत्यंत व्यापक और गहरा है। समाज में बड़े परिवर्तन हमेशा संस्थानों के जागरूक और जिम्मेदार निर्णयों से ही शुरू होते हैं। यदि विश्वविद्यालय दृढ़ता और ईमानदारी के साथ नेतृत्व करेंगे, तो समाज भी विश्वास के साथ उनका अनुसरण करेगा।

भारत का भविष्य केवल आर्थिक विकास से निर्धारित नहीं होगा, बल्कि उन मूल्यों से तय होगा जिन्हें हम अपनाते हैं, उन जिम्मेदारियों से जिन्हें हम स्वीकार करते हैं, और विकास तथा स्थिरता के बीच जिस संतुलन को हम स्थापित करते हैं। इस राष्ट्रीय यात्रा में विश्वविद्यालयों की भूमिका अत्यंत पवित्र और महत्वपूर्ण है। आइए, हम सभी आत्मविश्वास, प्रतिबद्धता और सामूहिक संकल्प के साथ एक हरित परिसर, एक सशक्त राष्ट्र और मानवता के अधिक सतत भविष्य की ओर आगे बढ़ें।

राजस्थान में चर्चित पेपर लीक घटनाएं

राजस्थान में पिछले कुछ वर्षों से पेपर लीक की घटनाएं लगातार बढ़ती जा रही हैं। विश्वविद्यालयों और सरकारी भर्ती परीक्षाओं में सामने आए इन मामलों ने शिक्षा व्यवस्था की विश्वसनीयता पर गंभीर प्रश्नचिह्न खड़े कर दिए हैं। इन घटनाओं का सबसे अधिक प्रभाव उन लाखों विद्यार्थियों पर पड़ा है, जो कठिन मेहनत और ईमानदारी से परीक्षाओं की तैयारी करते हैं।

वर्ष 2015 में भी बी.कॉम फाइनल का प्रश्नपत्र लीक हो गया था। परीक्षा शुरू होने से एक रात पहले ही यह पेपर व्हाट्सऐप पर वायरल हो गया था। विद्यार्थियों के भारी विरोध प्रदर्शन के बाद विश्वविद्यालय प्रशासन को परीक्षा रद्द करनी पड़ी थी। इसके अलावा वर्ष 2017 में राजस्थान विश्वविद्यालय में बड़े स्तर पर पेपर लीक का मामला सामने आया था। यह मामला बी.कॉम पार्ट-III (कॉमर्स), बी.ए. पार्ट-III (भूगोल) तथा एम.कॉम अकाउंटेंसी एवं बिजनेस स्टैटिस्टिक्स के प्रश्नपत्रों से जुड़ा हुआ था। इस प्रकरण में स्पेशल ऑपरेशंस ग्रुप (एसओजी) ने प्रोफेसरों और कॉलेज लेक्चरर्स के एक बड़े रैकेट का भंडाफोड़ किया था। जांच में सामने आया कि पेपर तैयार करने वाले कुछ प्रोफेसर परीक्षा से पहले ही प्रश्नपत्र व्हाट्सऐप के माध्यम से साझा कर देते थे। मामले में 19 से अधिक लोगों को गिरफ्तार किया गया था तथा लगभग 200 कॉलेजों में दोबारा परीक्षाएं आयोजित करनी पड़ी थीं। इसी प्रकार वर्ष 2017 में ही महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय में एम.कॉम फाइनल के पेपर लीक होने की खबरें सामने आई थीं। इस मामले में आरोप लगाया गया था कि परीक्षा से जुड़े कुछ लोगों ने निजी लाभ के लिए परीक्षा से पहले ही प्रश्नपत्र हासिल कर लिया था ।

वर्ष 2023 में भी बी.ए. फाइनल ईयर के भूगोल विषय का पेपर लीक होने का मामला सामने आया, जिसमें तीन निरीक्षकों (इनविजिलेटर्स) को गिरफ्तार किया गया था। इन घटनाओं के अलावा राजस्थान में कई अन्य बड़ी भर्ती परीक्षाएं भी पेपर लीक का शिकार हुई हैं। वर्ष 2021 में राजस्थान अध्यापक

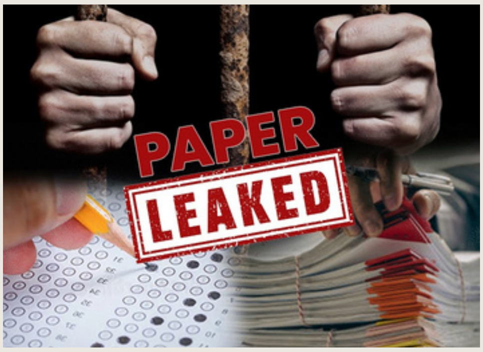

पात्रता परीक्षा (रीट) का पेपर लीक होने से पूरे राज्य में भारी विवाद खड़ा हो गया था।

वर्ष 2022 में राजस्थान लोक सेवा आयोग (द्वारा आयोजित सेकंड ग्रेड शिक्षक भर्ती परीक्षा का सामान्य ज्ञान पेपर भी परीक्षा से पहले सोशल मीडिया पर वायरल हो गया था। इसके बाद आयोग को परीक्षा रद्द करनी पड़ी तथा कई लोगों को हिरासत में लिया गया।

इसी तरह राजस्थान पुलिस सब-इंस्पेक्टर भर्ती परीक्षा 2021 में भी पेपर लीक का मामला सामने आया। इसके अतिरिक्त राजस्थान पुलिस कांस्टेबल भर्ती परीक्षा 2022 में भी पेपर लीक और नकल गिरोहों के सक्रिय होने की खबरें सामने आई थीं, जिसने राज्य की परीक्षा प्रणाली की पारदर्शिता और सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर चिंता पैदा कर दी।

रातों की मेहनत पर भारी पड़ता पेपर लीक — आखिर कब तक?

पेपर लीक की घटनाओं का विद्यार्थियों के जीवन पर अत्यंत गहरा और नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। हर वर्ष लाखों विद्यार्थी अपने बेहतर भविष्य के सपनों को पूरा करने के लिए दिन-रात कठिन मेहनत करते हैं। वे लंबे समय तक पढ़ाई, कोचिंग, नोट्स और अभ्यास में अपना पूरा समय और ऊर्जा लगा देते हैं। कई विद्यार्थी तो अपनी निजी खुशियों, पारिवारिक कार्यक्रमों और आराम तक का त्याग कर केवल परीक्षा की तैयारी में जुटे रहते हैं। लेकिन जब परीक्षा से पहले ही प्रश्नपत्र लीक हो जाता है, तब उनकी वर्षों की मेहनत और ईमानदारी पर पानी फिर जाता है। पेपर लीक होने के बाद कई बार परीक्षाएँ रद्द करनी पड़ती हैं या दोबारा आयोजित करनी पड़ती हैं, जिससे विद्यार्थियों को मानसिक तनाव, चिंता और निराशा का सामना करना पड़ता है। लगातार परीक्षा तिथि बदलने और अनिश्चितता की स्थिति के कारण विद्यार्थियों का आत्मविश्वास कमजोर होने लगता है। कई छात्र अवसाद और हताशा का शिकार भी हो जाते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि उनकी मेहनत का कोई मूल्य नहीं रह गया है। आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के विद्यार्थियों पर इसका प्रभाव और अधिक गंभीर होता है। अनेक छात्र गांवों और छोटे शहरों से बड़े शहरों में आकर हॉस्टल या किराए के कमरों में रहकर पढ़ाई करते हैं। उनके परिवार बड़ी मुश्किल से फीस, कोचिंग और रहने-खाने का खर्च उठाते हैं। जब पेपर लीक के कारण परीक्षा रद्द होती है, तो विद्यार्थियों का समय ही नहीं बल्कि परिवार का पैसा और संसाधन भी व्यर्थ हो जाते हैं। कई बार दोबारा परीक्षा की तैयारी के लिए अतिरिक्त खर्च उठाना पड़ता है, जो गरीब परिवारों के लिए बहुत कठिन होता है।

पेपर लीक की घटनाएं केवल विद्यार्थियों की मेहनत को ही प्रभावित नहीं करतीं, बल्कि पूरी शिक्षा व्यवस्था की विश्वसनीयता पर भी सवाल खड़े कर देती हैं। इससे ईमानदारी से मेहनत करने वाले विद्यार्थियों का परीक्षा प्रणाली और सरकारी संस्थाओं पर विश्वास कम होने लगता है। उन्हें यह महसूस होने लगता है कि मेहनत और योग्यता से अधिक महत्व भ्रष्टाचार और गलत तरीकों को दिया जा रहा है। लगातार सामने आ रहे पेपर लीक के मामलों ने युवाओं के भविष्य को असुरक्षित बना दिया है। यह समस्या केवल परीक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज में बढ़ते भ्रष्टाचार और शिक्षा व्यवस्था की कमजोरियों को भी उजागर करती है। इसलिए आवश्यक है कि सरकार और संबंधित संस्थाएं परीक्षा प्रणाली को अधिक सुरक्षित, पारदर्शी और निष्पक्ष बनाएं, ताकि विद्यार्थियों की मेहनत और भविष्य सुरक्षित रह सके।

परीक्षा का तनाव और मानसिक स्वास्थ्य

आज के समय में पढ़ाई और प्रतियोगी परीक्षाओं का दबाव लगातार बढ़ता जा रहा है। हर छात्र अच्छे अंक लाना चाहता है और अपने माता-पिता का नाम रोशन करना चाहता है। लेकिन इसी बीच कई छात्र तनाव और मानसिक दबाव का सामना भी कर रहे हैं। परीक्षा का डर अब सिर्फ पढ़ाई तक सीमित नहीं रह गया, बल्कि यह छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करने लगा है। परीक्षा आते ही ज्यादातर छात्रों की दिनचर्या बदल जाती है। देर रात तक पढ़ाई करना, बार-बार सिलेबस पूरा करने की चिंता और अच्छे नंबर लाने का दबाव छात्रों को परेशान करने लगता है। कई बार छात्र इतना तनाव ले लेते हैं कि उन्हें ठीक से नींद भी नहीं आती। कुछ छात्रों को डर रहता है कि अगर अच्छे अंक नहीं आए तो लोग क्या कहेंगे।आजकल माता-पिता की उम्मीदें भी बच्चों पर काफी दबाव डालती हैं। हर कोई चाहता है कि उनका बच्चा सबसे आगे रहे। इसके अलावा सोशल मीडिया पर दूसरों की सफलता देखकर भी कई छात्र खुद की तुलना करने लगते हैं। इससे उनका आत्मविश्वास कम होने लगता है और वे खुद को कमजोर महसूस करने लगते हैं। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले छात्रों पर यह दबाव और ज्यादा होता है। नीट, जेईई, यूपीएससी, एसएससी जैसी परीक्षाओं के लिए छात्र कई साल मेहनत करते हैं। लगातार पढ़ाई, टेस्ट और रिजल्ट की चिंता उन्हें मानसिक रूप से थका देती है। कई बार असफलता मिलने पर छात्र निराश हो जाते हैं।तनाव का असर केवल दिमाग पर ही नहीं, बल्कि शरीर पर भी पड़ता है। ज्यादा तनाव लेने से चिड़चिड़ापन, थकान, सिरदर्द और चिंता जैसी समस्याएं होने लगती हैं। कुछ छात्र अकेले रहना पसंद करने लगते हैं और लोगों से बात करना कम कर देते हैं। हालांकि परीक्षा जीवन का एक हिस्सा है, पूरी जिंदगी नहीं। माता-पिता और शिक्षकों को भी छात्रों को समझने की जरूरत है। बच्चों पर जरूरत से ज्यादा दबाव डालने के बजाय उन्हें सपोर्ट और मोटिवेशन देना चाहिए। अगर कोई छात्र तनाव में है, तो उससे खुलकर बात करनी चाहिए। अगर छात्र मानसिक रूप से मजबूत और खुश रहेंगे, तभी वे अपने जीवन में सही मायनों में सफल हो पाएंगे।

'डिग्री के साथ दक्षता' मॉडल पर कार्य कर रहा है एमडीएस विश्वविद्यालय

एआई, डेटा साइंस, साइबर सिक्योरिटी, योग एवं भारतीय ज्ञान परंपरा आधारित नए पाठ्यक्रम शुरू

अजमेर. महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर ने शैक्षणिक सत्र 2026-27 हेतु प्रवेश प्रक्रिया प्रारम्भ करते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 आधारित रोजगारपरक, कौशल आधारित एवं बहुविषयक शिक्षा मॉडल प्रस्तुत किया। विश्वविद्यालय के मीडिया सेंटर में आयोजित प्रेस वार्ता में कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने विश्वविद्यालय की नई शैक्षणिक दिशा, प्रवेश प्रक्रिया, डिजिटल सुधार, योग आधारित पहल, कौशल विकास योजनाओं एवं छात्र-केंद्रित विजन की जानकारी दी।

कुलगुरु प्रो. अग्रवाल ने कहा कि विश्वविद्यालय अपने आप को आधुनिक गुरुकुल की तर्ज पर विकसित कर रहा है। विश्वविद्यालय "डिग्री के साथ दक्षता" मॉडल पर कार्य कर रहा है, जहां विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ कौशल, व्यक्तित्व विकास, नेतृत्व क्षमता, उद्योग आधारित प्रशिक्षण एवं रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जाएंगे।

विश्वविद्यालय द्वारा नए सत्र के लिए एआई, एमसीए डेटा साइंस, साइबर सिक्योरिटी, एमए अंग्रेजी, एमए संस्कृत, योग एवं भारतीय ज्ञान परंपरा आधारित नए पाठ्यक्रम शुरू किए गए हैं। कुलगुरु प्रो. अग्रवाल ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा संबद्ध महाविद्यालयों में 'योग सब-सेंटर' स्थापित किए जाएंगे, जहां योग प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम संचालित होंगे।

विश्वविद्यालय ने बहुविकल्पीय प्रवेश प्रणाली लागू की है, जिसके तहत एक विभाग में प्रवेश नहीं मिलने पर विद्यार्थी अन्य विषय में बिना अतिरिक्त शुल्क प्रवेश प्राप्त कर सकेंगे।

विश्वविद्यालय में शीघ्र ही एनसीसी, रोवर-स्काउट एवं रेंजर-गाइड गतिविधियां भी प्रारम्भ की जाएंगी। विद्यार्थियों को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर के विशेषज्ञों द्वारा ऑनलाइन एवं ऑफलाइन शिक्षण सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी।

साथ ही प्लेसमेंट सेल को अधिक सक्रिय बनाते हुए 'फिनिशिंग स्कूल' की स्थापना प्रस्तावित है, जहां विद्यार्थियों को व्यक्तित्व विकास, संचार कौशल एवं इंटरव्यू प्रशिक्षण दिया जाएगा।

कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने युवाओं से अधिकाधिक संख्या में एमडीएस विश्वविद्यालय में प्रवेश लेकर इस शैक्षणिक परिवार का हिस्सा बनने का आह्वान किया।

प्रेस वार्ता में कुलसचिव कैलाश चन्द्र शर्मा, मीडिया प्रभारी प्रो. शिव प्रसाद, छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. सुभाष चन्द्र, परीक्षा नियंत्रक डॉ. सुनील कुमार टेलर तथा डॉ. सूरजमल रॉव उपस्थित रहे।

प्रतियोगी परीक्षाओं में एमडीएसयू का दमदार प्रदर्शन, आरएएस में प्रदेश में दूसरा स्थान

अजमेर. महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय (एमडीएसयू), अजमेर के विद्यार्थियों ने राजस्थान प्रशासनिक सेवा (आरएएस) परीक्षा में उल्लेखनीय प्रदर्शन करते हुए नई उपलब्धि हासिल की है। विश्वविद्यालय से इस वर्ष कुल 205 अभ्यर्थी आरएएस साक्षात्कार चरण तक पहुंचे हैं। यह संख्या प्रदेश में दूसरे स्थान पर बताई जा रही है।

विश्वविद्यालय प्रशासन के अनुसार एमडीएसयू में संचालित पाठ्यक्रमों को इस प्रकार विकसित किया गया है कि विद्यार्थी नियमित अध्ययन के साथ-साथ विभिन्न राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी भी प्रभावी रूप से कर सकें। पाठ्यक्रम में समसामयिक विषयों, विश्लेषणात्मक अध्ययन, तार्किक क्षमता तथा प्रशासनिक दृष्टिकोण पर विशेष बल दिया जाता है।

विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने केवल प्रशासनिक सेवाओं में ही नहीं, बल्कि यूजीसी-नेट एवं जेआरएफ जैसी परीक्षाओं में भी निरंतर सफलता प्राप्त की है। प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में विद्यार्थी जूनियर रिसर्च फेलोशिप एवं असिस्टेंट प्रोफेसर पात्रता अर्जित कर उच्च शिक्षा एवं शोध के क्षेत्र में अपनी पहचान बना रहे हैं।

विश्वविद्यालय परिसर में विद्यार्थियों को नियमित शैक्षणिक गतिविधियों के साथ प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए विशेष मार्गदर्शन उपलब्ध कराया जाता है। विशेषज्ञ शिक्षकों द्वारा अध्ययन सामग्री, व्यक्तित्व विकास तथा साक्षात्कार प्रशिक्षण जैसी सुविधाएं प्रदान की जाती हैं।

विश्वविद्यालय प्रशासन का मानना है कि विद्यार्थियों की यह सफलता संस्थान के शैक्षणिक वातावरण, नवाचार आधारित पहल तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षण व्यवस्था का परिणाम है।

कुलपति प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल के नेतृत्व में विश्वविद्यालय शिक्षा, शोध, रोजगारोन्मुखी गतिविधियों तथा प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के क्षेत्र में निरंतर नए आयाम स्थापित कर रहा है।

एमडीएसयू में मेधावी विद्यार्थियों को फीस वापसी, छात्रवृत्ति और रोजगारोन्मुखी सुविधाओं का लाभ

अजमेर. महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय (एमडीएसयू) ने विद्यार्थियों के लिए कई नई सुविधाओं और प्रोत्साहन योजनाओं की घोषणा की है। कुलपति प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने बताया कि सेमेस्टर प्रथम एवं तृतीय में प्रथम-द्वितीय सेमेस्टर के संयुक्त परिणाम में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की ट्यूशन फीस वापस की जाएगी। संस्कृत, वैदिक वाङ्मय, हिंदी एवं अंग्रेजी विषयों में भारत हेरिटेज स्कॉलरशिप प्रदान की जाएगी।

विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के लिए विश्वविद्यालय ने छात्रवृत्ति, फीस रियायत और रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण की कई घोषणाएं की हैं। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहन राशि व शोध छात्रवृत्ति दी जाएगी, जबकि मेधावी और जरूरतमंद विद्यार्थियों को फीस में छूट मिलेगी। साथ ही एनसीसी, रोवर-रेंजर गतिविधियां, विशेषज्ञ शिक्षकों के व्याख्यान और फिनिशिंग स्कूल की सुविधा भी शुरू की जाएगी।

माननीय कुलगुरु प्रोफेसर सुरेश कुमार अग्रवाल जी के मार्गदर्शन में, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के प्रथम सेमेस्टर के विद्यार्थी – लोकेश कश्यप, नेहा शर्मा और मानसी माहेश्वरी के संयुक्त प्रयास से ई -पेपर तैयार किया गया।